

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया ने दस दिवसीय रिसर्च मेथडोलॉजी प्रोग्राम आयोजित किया

'शोध प्रविधि' पर दस दिवसीय ऑनलाइन पाठ्यक्रम, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र (एसएनसीडब्ल्यूएस), जामिया मिल्लिया इस्लामिया और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (आईसीएसएसआर), नई दिल्ली के सहयोग से 18 अगस्त से 30 अगस्त 2021 तक आयोजित किया जा रहा है।

जामिया की कुलपति प्रो. नजमा अख्तर ने 19 अगस्त 2021 को ऑनलाइन रूप से आयोजित उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में जामिया के आलावा अन्य विश्वविद्यालयों से विषय विशेषज्ञों, संकाय सदस्यों, शोधार्थियों और छात्रों सहित 70 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य के दौरान प्रो. नजमा अख्तर ने अनुसंधान के महत्व के बारे में बात की और इस बात पर जोर दिया कि डेटा की बदलती प्रकृति, डेटा की बढ़ती मात्रा और डेटा-इंटेंसिव इकॉनमी के कारण छात्रों के लिए 'शोध प्रविधि' पाठ्यक्रम आयोजित करना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि बेहतर रोजगार योग्यता के लिए अनुसंधान साक्षरता और कौशल आवश्यक है।

प्रो. अख्तर ने यह भी कहा कि अनुसंधान के लिए एक अंतःविषय / बहु-विषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता है और आशा व्यक्त की कि 'शोध प्रविधि' पाठ्यक्रम प्रतिभागियों के ज्ञान को बढ़ाएगा और उन्हें गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

प्रो. सबिहा हुसैन, पाठ्यक्रम निदेशक और निदेशक, एसएनसीडब्ल्यूएस ने प्रतिनिधियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया, उन्हें केंद्र की गतिविधियों, उपलब्धियों और पाठ्यक्रम के प्रमुख उद्देश्यों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्वानों के बीच अनुसंधान कौशल विकसित करना, उन्हें अनुसंधान के सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों पहलुओं से परिचित कराना है।

उन्होंने 40 सत्रों वाले पाठ्यक्रम के लेआउट के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की। विभिन्न सामाजिक विज्ञान विषयों और प्रमुख विश्वविद्यालयों के 22 प्रख्यात विशेषज्ञों तथा पाठ्यक्रम के लिए केंद्रीय, राज्य और क्षेत्रीय विश्वविद्यालयों से आईसीएसएसआर के दिशानिर्देशों के अनुसार 38 शोध विद्वानों को चुना गया है। प्रतिभागियों के सीखने के

स्तर को मापने के लिए मूल्यांकन रणनीति की योजना बनाई गई है। पठन सामग्री अपलोड करने के लिए एक गूगल कक्षा बनाई गई है।

जामिया के स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज के डीन प्रो. रविंदर कुमार ने परिचयात्मक टिप्पणी दी। प्रो. रविंदर कुमार ने सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के महत्व और उपयोगिता पर प्रकाश डाला और कहा कि ज्ञान का स्रोत, सामंजस्य और एकता में योगदान देता है, सामाजिक समस्याओं को हल करने में मदद करता है, समाज में संरचनात्मक परिवर्तन लाता है, नवाचार और रचनात्मकता लाता है।

विशिष्ट अतिथि और आईसीएसएसआर ऑब्जर्वर, प्रोफेसर अश्विनी के. महापात्र, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू के डीन ने शोध पद्धति, विचारों और अवधारणाओं के पुनर्निर्माण, विचारों की बहुलता और अनुसंधान के संचालन के तरीकों पर जोर दिया। प्रो. अश्विनी ने प्रतिभागियों को गुणवत्तापूर्ण शोध करने के स्वदेशी तरीकों के बारे में बताया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) पंकज मित्तल, महासचिव, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (एआईयू), पूर्व कुलपति, भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय, हरियाणा ने देश में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के सामने आने वाली समस्याओं जैसे कि धन की कमी, शोध की गुणवत्ता, साहित्यिक चोरी के गंभीर मुद्दे और शोध कार्य का दोहराव के बारे में बात की।

डॉ. मित्तल ने एनईपी 2020 के तहत अनुसंधान को दिए गए महत्व, राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) के प्रावधान और इस तरह के अवसर का उपयोग कैसे किया जा सकता है, इस पर प्रकाश डाला। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोगी अनुसंधान परियोजनाओं और केंद्रित अनुसंधान की आवश्यकता के बारे में भी बात की। मुख्य अतिथि ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया कि जुनून गुणवत्तापूर्ण शोध की कुंजी है।

पाठ्यक्रम की सह-निदेशक डॉ. सुरैया तबस्सुम, सहायक प्रोफेसर, एसएनसीडब्ल्यूएस, जेएमआई द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया